International Journal of All Research Education and Scientific Methods (IJARESM), ISSN: 2455-6211
Volume 10, Issue 3, March -2022, Impact Factor: 7.429, Available online at: www.ijaresm.com

# यशवंतराव चव्हाण का साहित्यिक योगदान

प्रो. डॉ. ललिता नामदेव राठोड

हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड

---

यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र के सामान्य जनों के नेता थे। संयुक्त महाराष्ट्र आन्दोलन के लिए अपने समर्थन के माध्यम से वे महाराष्ट्र राज्य के रचयिताओं में से एक थे। वे 1 मई 1960 को महाराष्ट्र के पहले मुख्यमन्त्री बने। जिनके कार्यो से संपूर्ण महाराष्ट्र क्षेत्र लाभान्वित हुआ है। वे केवल एक राजकीय व्यक्तित्व ही नहीं है, इससे अधिक वे एक सामाजिक दायित्व समझने और कार्य करनेवाले संवेदनशील नेता है। `महाराष्ट्र के विकास के लिए उन्होंने कुछ स्वप्न देखें थे जैसे कि संपूर्ण राज्य के औद्योगिक तथा कृषि क्षेत्रों का समान रूप से विकास होना चाहिए उन्होंने सहकारी आंदोलन के माध्यम से इस स्वप्न को पूर्ण करने की चेष्टा की तथा मुख्यमंत्री के रूप में उनके शासन के दौरान लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकृत निकायों तथा कृषि भूमि सीमांकन अधिनियम के संबंध में कानून पारित किए गए।` इसके साथ ही 1962 में भारत चीन सीमा विवाद के मद्देनजर यशवंतराव चव्हाण को भारत का रक्षा मंत्री नियुक्त किया गया। इस स्थिति को चव्हाण जी ने बहुत ही संवेदनशिलता से निभाया, इसलिए महान नेताओं की सूचि में उनका नाम आज भी अदब से लिया जाता है।

यशवंतराव चव्हाण का शैक्षिक योगदान भी बहुत महत्त्वपूर्ण है, उन्होंने मराठवाडा क्षेत्र में आज के डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय की स्थापना की, इसके साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय की भी स्थापना की, महाराष्ट्र राज्य के कृषी विश्वविद्यालयों के स्थापना में भी उनके विचारों के बीज रहें है। जिस प्रकार वे एक राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक क्षेत्र में काम करनेवाले निरंतर श्रमरत योद्धा थे उसी प्रकार उनका भाषिक और साहित्यिक योगदान भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। उनका मराठी साहित्य और भाषा के क्षेत्र में काम आज भी बहुत महत्त्वपूर्व और प्रासंगिक है।

यशवंतराव चव्हाण जी की भाषा पर काफी अच्छी पकड़ थी, इसलिए उनके भाषणों को सुनने के लिए लोग आकर्षित होते थे, उनके भाषणों और लेखों को आज भी पढ़ा जाता है, और उनके विचारों को समझा जाता है। उनके भाषणों और लेखों का केंद्र लोकतंत्र रहा है। विकीपीडिया के अनुसार उन्होंनें "अपने भाषणों और लेखों में दृढ़ता से समाजवादी लोकतन्त्र की वकालत की और महाराष्ट्र में किसानों की बेहतरी के लिए सहकारी समितियों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।" 1 इस प्रकार यशवंतराव चव्हाण का जीवन काल संघर्ष की संपूर्ण गाथा है, जिन्होंने अपने सुझ-बुझ और प्रखर व्यक्तित्व के आधारपर जी है। जिसमें उन्होंने राजनीतिक के रूप में ही काम नहीं किया बल्कि एक सामाजिक दायित्व को सामने रखकर कार्य किया है, इसलिए उन्हें आज भी सम्मान के साथ याद किया जाता है। यशवंतराव चव्हाण को साहित्य में साहित्य में काफी रूचि थी इसलिए "उन्होंने मराठी साहित्य मंडल की स्थापना की और मराठी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया, इसके साथ ही

उन्होंने विश्वकोश मंडल की भी स्थापना की है। वह कई कवियों, संपादकों और कई मराठी तथा हिंदी लेखकों के साथ काफी करीबी रूप से जुड़े थे।" 2

**(विकीपीडिया)**

इस प्रकार यशवंतराव चव्हाण केवल मराठी भाषी होने के नाते मराठी साहित्य और साहित्यकारों से ही नहीं जुड़े थे, साथ ही वे हिंदी साहित्य और साहित्यकारों से भी संपर्क में थे। यशवंतराव चव्हाण ने मराठी साहित्य के योगदान के लिए मराठी साहित्य मंडल की स्थापना तो की साथ ही उनके लिए सम्मेलनों का भी आयोजन किया है। इसप्रकार उनके मराठी भाषा के प्रति लगाव को हम जान सकते हैं।

मराठी साहित्य में आत्मकथा विधा को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए यशवंतराव चव्हाण जी का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपना आत्मकथन तीन खण्डों में लिखने की योजना बनाई थी। परंतु अपने काम की व्यस्तता के कारण एक खंड ही पूरा कर पाए। इसमें उनके जीवन अनुभव काफी समृद्ध थे, जिससे युवा पीढ़ी सजग जरूर होती है। विकीपीडिया के अनुसार उन्होंने "तीन खण्डों में अपनी आत्मकथा लिखने की योजना बनाई थी। पहले खंड में सातारा जिले में व्यतीत उनके प्रारंभिक वर्ष शामिल हैं। चूंकि उनका जन्मस्थान कृष्णा नदी के तट पर स्थित है, उन्होंने प्रथम खंड को "कृष्णा काठ" नाम दिया. द्विभाषी बम्बई राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में, तथा उसके बाद नवगठित महाराष्ट्र राज्य में भी उनका पूरा समय मुंबई में ही व्यतीत हुआ था और इसलिए दूसरे खंड का प्रस्तावित नाम "सागर तीर" था। बाद में 1962 में पंडित नेहरू द्वारा उन्हें भारत का रक्षा मंत्री नियुक्त किया गया। उसके बाद से 1984 में अपनी मृत्यु तक वे दिल्ली में ही रहे;इसलिए अपने तीसरे खंड के लिए उन्होंने "यमुना काठ" नाम का प्रस्ताव किया।

लेकिन दुर्भाग्यवश उनका केवल प्रथम खंड ही पूर्ण हो पाया और प्रकाशित हुआ।" 3 इस प्रकार यशवंतराव चव्हाण जी को साहित्य में काफी रूचि थी। मराठी साहित्य के आत्मकथा साहित्य में उन्होंने अपना नाम अपने सृजनात्मक कौशल के द्वारा दर्ज किया है। `कृष्णाकाठ` यह उनका आत्मकथन परक साहित्य है। कृष्णाकाठ में उनके बचपन, शिक्षा, तथा उनके पारिवारिक संघर्ष का इतिहास है। `वैचारिक आंदोलन` इस खंड में उनके राष्ट्रीय आंदोलन के संबंधित कार्य और उनके राजनीतिक जीवन का इतिहास है। `निवड` इस खंड में उनके लॉ महाविद्यालयीन शिक्षा, वकिली जीवन में आजादी आंदोलन और पार्लमेंट तक की जीवन यात्रा चित्रित है। उनके इस पुस्तक में देवराष्ट्र इस गांव का वर्णन आया है, उसी प्रकार उनका अपनी खेती तथा अपने गांव की मिट्टी के संबंध में प्रेम का वर्णन भी बहुत संवेदनशील नजर आता है। भास्कर लक्ष्मण भोळे लिखते हैं कि,"साहित्यास्वादन की भूमिका हमारी पहली भूमिका है। ऐसा यशवंतराव कहते थे परंतु,उन्होंने ललित लेखन पहले ही छोड दिया था, फिर भी वे कला के प्रति निरंतर अनुरक्त थे,प्राकृतिक वातावरण में रमण करना, अपने अंतस से अनुभूत करना, बीती यादों को याद करना, लोकजीवन से संबद्ध रहना, बुद्धि के साथ भावनाओं को महत्त्व देना यह सब उनके अंदर के सजग कलाकार का परिचय देती है।" 4 इसके साथ ही बाबुराव उपाध्ये अपने आलेख यशवंतरराव चव्हाण व्यक्ती आणि वाड्मय` में लिखते हैं कि, "यशवंतराव चव्हाण के अंदर का साहित्यिक हमेशा बहुजनहिताय की भूमिका में रहकर लिखनेवाला था, वे संवेदनशील, सहृदयी व्यक्तित्व थे, राजनीतिक व्यस्तताओं के बावजुद उन्होंने लेखन, वाचन के लिए समय निकाला और अपने निश्चित उद्देश्य के लिए

हमेशा सक्रिय रहे।" 5 इस प्रकार यशवंतराव चव्हाण जी में साहित्यिकार की संवेदनशीलता रही है, इसलिए राजनीतिक कार्य में भी उनकी भविष्य विषयक दृष्टि विद्यमान दिखाई देती है।

प्रहार पत्र के एक रिपोर्ट के अनुसार, "जिसमें उन्होंने तत्कालिन सामाजिक जीवन का यथार्थवादी चित्रण किया है। यशवंतराव चव्हाण ने मराठी साहित्य, मराठी संस्कृती, तमाशा, नाटक, पोवाडा, लोककला जैसे साहित्यिक विधाओं को संपन्न बनाने के लिए अपना योगदान दिया है।" 6 इस प्रकार यशवंतराव चव्हाण के साहित्य में जनकल्याण की भूमिका तो रही है, उसी प्रकार साहित्यिक मौलिकता की दृष्टि से उनके नवीनता का भी परिचय होता है। कराड में एक साहित्यसंमेलन हुआ था, तब यशवंतराव चव्हाण ने एक भाषण दिया था, वह भाषण उनका साहित्यिक ज्ञान, जानकारी और गुण विशेषता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा था। वे साहित्य को जनचेतना का माध्यम मानते हैं।

यशवंतराव चव्हाण के द्वारा रचित साहित्य इस प्रकार है - आपले नवे मुंबई राज्य (इ.स.१९५७), ऋणानुबंध (ललित लेख) (१९७५), कृष्णाकाठ (आत्मचरित्र १ला खंड) (१९८४), भूमिका (१९७९), महाराष्ट्र राज्य निर्मिती विधेयक (१९६०), विदेश दर्शन, सह्याद्रीचे वारे (१९६२) - भाषण संग्रह, युगांतर (१९७०) में स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर में भारतीय समस्याओं पर चर्चा की है। उनके जीवन पर 'बखर एका वादळाची' (2014) इस फिल्म का निर्माण जब्बार पटेल ने किया है। यशवंतराव चव्हाण का साहित्य प्रेरक है, उनके जीवनअनुभव मानवता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे यह उनके सृजनात्मक साहित्य में दिखाई देता है। मधुकर भावे लिखते हैं कि, 'यशवंतराव यह साहित्य के साधक थे, मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषा पर उनका समान रूप से अधिकार था, बचपन में उन्होंने राजनीति के साथ ही कार्लमार्क्स पढते समय संत

साहित्य का भी चिंतन किया। हरिभाऊ आपटे उनके पसंदिदा लेखक थे, यशवंतराव चव्हाण के अनेक साहित्यिक भाषण बड़े बड़े साहित्यिकों के सामने साहित्य के विचारमंच पर प्रभावित किए बीना नहीं रह सकते थे, उनको साहित्य का काफी ज्ञान था। वे जानते थे इसलिए हमेशा कहते थे कि बड़े बड़े प्रकल्प तैयार करना, रास्तों को तैयार करना, यह सरकार का काम तो है, परंतु दूसरी आंख सरकार की सांस्कृतिक भी होनी आवश्यक है।' इस प्रकार यशवंतराव उन्नत भविष्य के कामना के लिए आजीवन निरंतर श्रमरत रहे परंतु उनकी साहित्यिक साधना भी उसके साथ चलती रही है, जो आज भी मराठी साहित्य और भाषा के लिए अमूल्य है।

## संदर्भ सूची-

[1]. www.wikipedia.com (Online Available/ यशवंतराव चव्हाण/ Accessed dated on -22/03/2022 )
[2]. www.wikipedia.com (Online Available/ यशवंतराव चव्हाण/ Accessed dated on -23/03/2022 )
[3]. www.wikipedia.com (Online Available/ यशवंतराव चव्हाण/ Accessed dated on -23/03/2022 )
[4]. बाबुराव उपाध्ये-यशवंतरराव चव्हाण व्यक्ती आणि वाड्मय, Golden Research

[5]. Thoughts, Volume 4/ Issue-2, Aug 2014, ISSN-2231-5063, पृष्ठ - 03 वहीं पृ. 04

[6]. https://prahaar.in/ (Online Available/ यशवंतरराव चव्हाण व्यक्ती आणि वाङ्मय/ Accessed dated on -23/03/2022 )